



- कविता...

अगर परी
मुझको मिल जाए



अगर परी मुझको मिल जाए
उससे ढेरों बातें कर लूं।
मेरे संग वह धूमे-धामे
मेरे संग-संग ही घर आए,
मम्मी के हाथों की बढ़िया
खाकर खीर जरा मुसकाए।
उसके आने से धरती पर
मीठी रुन्धुन सी छा जाए,
मेरे संग वह नाचे जी भर
मेरे संग वह गाना गाए।
अगर परी मुझको मिल जाए
कह दूं दुनिया मुझे घुमा दो,
हाथ हाथ में लेकर मुझको
आसमान की सैर करा दो।
फूल खिलें गाी धरती पर
खुशबू वाला सीता सुना दो।
मेरे ही संग-संग वह धूमे
फिर वंशी की तान सुनाए,
अगर परी मुझको मिल जाए

■ प्रकाश मनु

● चुटकुले...



संता ने एक बार अपना एक्स-रे करवाया।

डॉक्टर : बंता (संता), तुम्हारे
एक्स-रे में तुम्हारी हड्डी टूटी हुई
है।

संता : चलो शुक्र है कि एक्स-
रे में ही टूटी है, अगर असल में
टूटी होती तो काफी खर्चा हो
जाता!



संता ने बाजार से एक अमरुद खरीदा और खाने लगा। अचानक उसने देखा कि अमरुद के बीच में एक कीड़ा है।

संता (गुस्से में): अरे ओप, तेरे
अमरूद में से तो कीड़ा निकल
है!
अमरूद वाला : भाई, अपनी—
अपनी किम्मत है, क्या पता
अगले अमरूद में से
मोटरसाइकिल निकल आए!
संता ने यह सुना और खुश
होकर बोला— अच्छा, चल फिर
5 किलो पैक कर दे!



● **जानकारी...**

कहां से आई चांदी

चा ♦ दी धरती की सबसे कीमती धातुओं में से एक है जिसका इस्तेमाल गहनों, सिक्कों, इलेक्ट्रॉनिक्स, सोलर पैनल और मेडिकल उपकरणों में किया जाता है, लेकिन आपको बता दें कि इसकी उत्पत्ति कई



लोगों की सोच से काफी ज्यादा अनोखी है। चांदी के परमाणु धरती के बनने से काफी पहले अंतरिक्ष की जबरदस्त घटनाओं के दौरान

बने थे। जैसे-जैसे हमारा ग्रह विकसित हुआ यह पुराना पदार्थ उसकी चट्टानों और खनिजों का हिस्सा बन गया। आज भी जमीन से चांदी निकालने का काम जारी है। इससे एक बड़ा सवाल उठता है कि क्या कभी इंसानों के पास से यह कीमती धातु खत्म हो सकती है? आइए जानते हैं।

चांदी एक भारी केमिकल एलिमेंट है, जिसे धरती पर आम जियोलॉजिकल प्रक्रियाओं से नहीं बनाया जा सकता। इसके परमाणु काफी ज्यादा ऊर्जा वाले एट्रोफिजिकल माहौल में बने, जहां हल्के एटॉमिक न्यूक्लियस न्यूट्रॉन को पकड़ा और रेडियोएक्टिव डीके से गुजरे। ऐसी प्रक्रियाएं दुर्लभ और ऊर्जावान अंतरिक्ष घटनाओं के दौरान हो सकती हैं, जिनमें न्यूट्रॉन स्टार का आपस में मिलना और कुछ खास तरह के तारों का फटना शामिल है।

इन घटनाओं ने नए बने एलिमेंट्स को अंतरिक्ष में फैला दिया। अरबों सालों में यह पदार्थ गैस और धूल के बादलों के साथ मिल गया। इससे आखिरकार हमारे सौर सिस्टम का निर्माण हुआ। इस वजह से आज धरती पर मौजूद चांदी काफी पुराने कॉस्मिक इतिहास का ही हिस्सा है।

धरती का निर्माण लगभग 4.5 अरब साल पहले युवा सूरज के चारों ओर घूम रहे पदार्थ से हुआ था। चांदी के परमाणु पहले से ही इस पदार्थ में मौजूद थे और विकसित हो रहे ग्रह का हिस्सा बन गए। धरती के शुरुआती इतिहास के दौरान इसकी ज्यादातर घनी धातु अंदरूनी हिस्से की तरफ चली गई। कुछ चांदी मैटल और क्रस्ट में रह गई। बाद में जियोलाॉजिकल प्रक्रियाओं ने इसे ऐसे जमाव में बदल दिया, जिन्हें बाद में खोजा और निकाला जा सका। चट्टानों की दरारों से गुजरने वाले गर्म और खनिजों से भरपूर तरल पदार्थ ने खुली हुई धातुओं को एक जगह से दूसरी जगह तक पहुंचाया। जब तापमान, दबाव या फिर केमिकल स्थिति में बदलाव हुआ तो चांदी वाले खनिज दरारों के अंदर क्रिस्टल के रूप में जम गए और मिनरल वेन्स बन गई।

भारती की ऊपरी परत में चांदी का भंडार सीमित हैं और आर्थिक रूप से निकाले जा सकने वाले भंडार टेक्नोलॉजी, कीमतों और निकालने की लागत पर निर्भर करते हैं। जैसे-जैसे आसानी से मिलने वाले भंडार खत्म होते जाएंगे कंपनियों को शायद ज्यादा गहरी जगह पर पहुंचना होगा या फिर कम ग्रेड वाले अयस्कों को प्रोसेस करना होगा।

यह बताना मुश्किल है कि चांदी की माइनिंग किस साल खत्म होगी। हो सकता है कि नए भंडार मिल जाएं, मौजूदा संसाधन आर्थिक रूप से फायदेमंद हो जाएं और माइनिंग टेक्नोलॉजी में तरक्की से निकाली जा सकने वाली मात्रा बदल जाए।

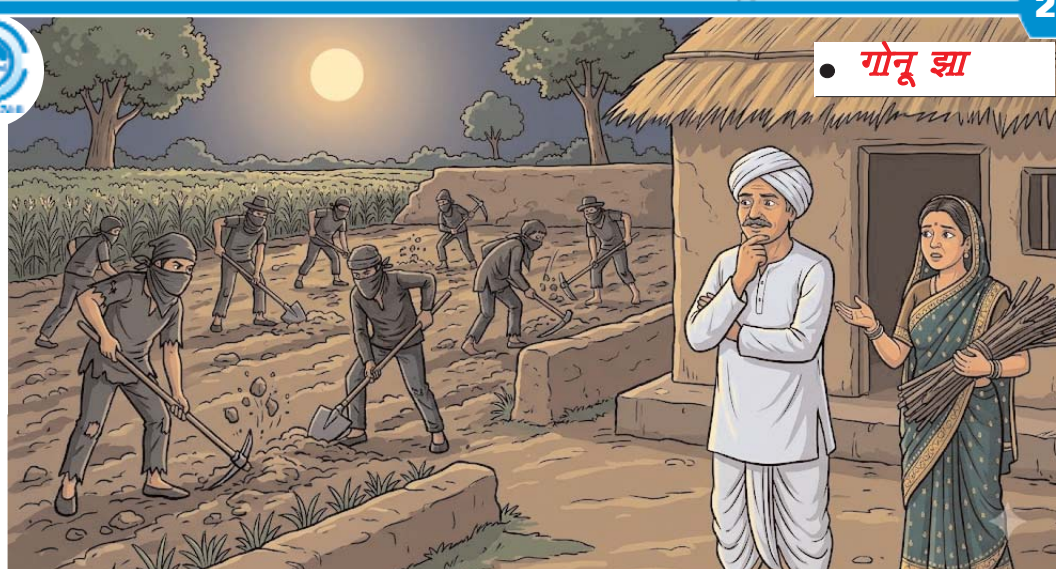


- रोचक...

नारकोंडम हॉर्नबिल



अंडमान सागर में स्थित नारकोंडम द्वीप का निर्माण लगभग 700,000 वर्ष पूर्व हुआ था जब समुद्र के मध्य में एक ज्वालामुखी फटा था। द्वीप के चारों ओर का समुद्र बहुत गहरा है, इसलिए पृथ्वी के सबसे ठंडे समय में भी, जब समुद्र का स्तर आज की तुलना में बहुत कम था, यह मुख्य भूमि से कभी नहीं जुड़ा। वर्षों से, पक्षियों द्वारा गिराए गए या हवा या समुद्री धाराओं द्वारा लाए गए पौधों के बीजों से इस द्वीप पर अब पाए जाने वाले घने जंगलों का विकास हुआ है। यह द्वीप छोटा (6.8 वर्ग किमी) है, लेकिन इतना बड़ा है कि इसमें कुछ आकर्षक स्थलीय वन्यजीव पाए जाते हैं। द्वीप पर पाए जाने वाले विभिन्न जीवों में सबसे आकर्षक एक ऐसा पक्षी है जो दुनिया में कहीं और नहीं पाया जाता। यह नारकोंडम हॉर्नबिल है, जो एशिया में पाई जाने वाली हॉर्नबिल की 32 प्रजातियों में से एक है। संभवतः इसके पूर्वज ने बहुत पहले इस द्वीप पर अपना बसेरा बनाया था और फिर यह वहाँ एक अलग प्रजाति के रूप में विकसित हुआ।



- **गोनू झा**

સ્વેત જોત ગદ્ય ચોર

के लिए निकले तो गोनू झा को अपने घर पर रहने का अवसर मिला। एक दिन वे अपनी पत्नी के साथ अपने घर के अहाते का परिभ्रमण कर रहे थे कि उनकी नजर घर के पिछवाड़े की खुली जमीन पर पड़ी।



उन्होंने अपनी पत्नी से कहा - 'तुमने कभी बताया नहीं कि घर के पिछवाड़े में झाड़ियों का जंगल- सा बन चुका है? इस खर-पतवार में तो साँप -बिछू, सियार सब की बहार हो जाएगी। चोर-उच्चक यदि इसमें छुप जाएँ तो पता भी लगाना मुश्किल होगा...



ही इस खर पतवार को साफ करवाऊँगा। जब इस बंजर जमीन पर खर- पतवार पैदा हो सकता है तो कुछ और भी पैदा हो सकता है। पहले मैं पता कर लेता हूँ कि यहाँ पर और क्या-क्या पैदा हो सकता है...

बात आई- गई हो गई। गोनु झा दूसरे घरेलू कार्यों को निपटाने में लग गए। बंजर को आबाद करने का खयाल उनके दिमाग से ही निकल गया। गाँव में वे इधर-उधर जाते। हमजोलियों से मिलते। दरबार के औपचारिक जीवन से मुक्त, ठेठ अपनी शैली में ठहाकेबाजी करते। कहीं उनके लिए भात-मछली और पकौड़े तले जाते तो कहीं भाँग घोंटा जाता। एक रात, इसी तरह की मटरगश्ती करके भाँग के तरंग में नचारी गाते हुए गोनु झा अपने घर की ओर लौट रहे थे कि उनकी नजर चार-पाँच हिलते-डुलते सायों पर पड़ी।

गोनु झा ने सोचा-यह उनका भ्रम हो सकता है क्योंकि उन्होंने भाँग पी रखी है। मगर फिर भी वे आँखें फाड़े अँधेरे में देखते रहे। अन्ततः गोनु झा ठमक गए। उन्हें स्पष्ट भान हुआ कि हिलते-डुलते साए चार-पाँच नहीं, आठ-दस हैं और उनके घर के आस-पास मंडरा रहे हैं। उन्होंने दो सायों को तेजी से अपने घर के पिछवाड़े जाते देखा। गोनु झा जहाँ थे वहीं एक पेड़ की ओट में खड़े होकर इन सायों की गतिविधियाँ देखने लगे। उन्होंने देखा कि शेष रह गए साये दो भागों में बँट गए। प्रत्येक भाग में चार-चार साए थे। तेजी से चार गोनु झा के घर के उत्तर, खुले स्थान में लगाए गए फलदार वृक्षों के बगीचे में घुस गए और चार घर के दक्षिण भाग में लगे आम के बगान में घुस गए।

अब गोनू झा खुद ऐसे लड़खड़ाते हुए चलने लगे मानो बहुत नशे में हों। वे गुनगुनाते भी जा रहे थे। कभी-कभी वे बहुत ऊँची आवाज में गुनगुनाते मगर यह समझ में नहीं आ रहा था कि वे क्या गुनगुना रहे हैं। उनकी नशे में डूबी आवाज रात के सन्नाटे में कुछ ज्यादा ही तेज प्रतीत होती थी। अपने दरवाजे पर वे पहुँचे ही थे कि पंडिताइन हाथ में दीया लिए घर से बाहर निकली।

-जारी



- चीन...

सरकारी कर्ज के कुल आंकड़ों के हिसाब से चीन दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा कर्जदार देश है। इस पर कुल सरकारी कर्ज लगभग 15 ट्रिलियन डॉलर है। जापान की तरह चीन का कर्ज भी मुख्य रूप से घरेलू स्रोतों से लिया गया है। चीनी सरकार ने इंफ्रास्ट्रक्चर और विकास कार्यों के लिए भारी मात्रा में कर्ज लिया है। इसके मुख्य स्रोतों में सरकारी बैंक, स्थानीय वित्तीय संस्थान और घरेलू संस्थागत निवेशक शामिल हैं। यह कॉर्पोरेट बॉन्ड जैसे अलग-अलग तरीकों से कर्ज देते हैं।

